1

स्नातकोत्तर हिन्दी विभाग
द्वितीय सेमेस्टर

WK 13 083-282 MONDAY MARCH 24

14 APR

दिनांक - 28-4-2020

"निर्गुण कौन देस को बासी?
मधुकर! हँसि समुझाय, सौंह दै बूझति साँच न हाँसी।।
को है जनक, जननि को कहियत, कौन नारि, को दासी?
कैसो बरन, भेस है कैसो केहि रस के अभिलाषी।।
पावैगो पुनि कियो आपनो जो रे! कहैगो गाँसी।।
सुनत मौन ह्वै रह्यो ठग्यो सो सूर सबै मति नासी।।64।।

विद्यार्थियों इसके पहले कि इस पहले पद की चर्चा करूँ मैं बता दूँ इन पदों के माध्यम से सूरदास जी ने निर्गुण का खण्डन और सगुण का मण्डन किया गया है। यहाँ यह जानना भी आवश्यक है कि इस खण्डन - मण्डन का कार्य मात्र सूरदास जी ने ही किया है या और पहले या बाद में भी इस बात की चर्चा की गयी है। यह तो मैंने पहले ही बता दिया है कि इस बात की चर्चा श्रीमद् भागवत महापुराण में भी की गयी है। साथ ही यह भी बता दूँ कि सूरदास के समकालीन और बाद के कवियों ने भी इस धारणा का

2014

२

25 TUESDAY MARCH

वर्णन किया है। इनके समकालीन कवि जो आचार्य वल्लभ की शिष्य परंपरा के कवि थे जिनका नाम था नंददास। उन्होंने भी 'भँवरगीत' नाम से रचना की है। परंतु सूर और नंद में अंतर यह है कि सूरदास की गोपियाँ हृदय पक्ष का प्रतिनिधित्व करती है और नंददास की गोपियाँ बुद्धि पक्ष का प्रतिनिधित्व करती है। आगे चलकर जगन्नाथ दास रत्नाकर ने 'उद्धवशतक' और अयोध्यासिंह उपाध्याय हरिऔध ने 'प्रियप्रवास' नाम से उस घटना को अपना काव्य विषय बनाया है।

अब बात प्रारंभ करते हैं प्रस्तुत पद की पहली पंक्ति ही प्रश्नवाचक है, और प्रश्न है निर्गुण किस देश का रहने वाला है? ऐसा प्रश्न गोपियाँ इसलिए करती हैं क्योंकि वह जिस ईश्वर को जानती हैं उनके माता-पिता तो थे ही उनका आवास कहाँ का और उनकी विशेषता क्या थी।

पहला शब्द सम्बोधन का है जिसमें वो पूछती हैं ऐ मधुकर, ऐ उद्धव जी बताओ कि जैसे निर्गुण की आप बात कर रहे हैं वह कहाँ

1 2 3 4 5 6
7 8 9 10 11 12 13
14 15 16 17 18 19 20
21 22 23 24 25 26 27
28 29 30
M T W T F S S
14 APR

का रहने वाला है। बड़ी चतुराई से बात करती हुई गोपियाँ हँसाते हुए अपनी बात कहती हैं और यह कहती हैं कि मैं को हँसी-मजाक में यह प्रश्न नहीं पूछ रही हूँ अतः समझ-बूझकर इसका जवाब दीजिए।

सूरदास की गोपियाँ तर्कशील नहीं हैं वो सीधे शब्दों में पूछती है कि इन निर्गुण ईश्वर के पिता कौन हैं और कौन इनकी माता है। वह यह भी पूछती है कि उनकी पत्नी कौन है और दासी कौन है यह भी बताओ। उसने तो देखा है श्रीकृष्ण रूपी साकार ईश्वर को जिनका रंग साँवला था, जो पीतांबरधारी थे और जो प्रेम रस के अभिलाषी थे। इसलिए तो ये प्रश्न करती हैं कि उस निर्गुण का रंग क्या है, वस्त्र कैसा है और किस रस की अभिलाषा वो करते हैं।

अगली पँक्ति में तो बड़े तीखे व्यंग्यात्मक शब्दों में कहती हैं कि हे उद्धव जी अगर हमलोगों से खोटी बात बताओगे तो उसका दुष्परिणाम

27 THURSDAY MARCH

086-279 WK 13

FEB 14

M	T	W	T	F	S	S
					1	2
3	4	5	6	7	8	9
10	11	12	13	14	15	16
17	18	19	20	21	22	23
24	25	26	27	28		

आपको भुगतना पड़ेगा।

इतनी बातें जब गोपियों से उद्धवजी सुनते हैं तो उनके होश उड़ जाते हैं और वे मौन हो जाते हैं ऐसा अनुभव उन्हें होता है कि उनका सारा ज्ञान भूल गया और किसी ने उनके मंतव्य को हर लिया है।

इस प्रकार हम देखते हैं कि बड़ी सहजता से गोपियाँ उद्धवजी के ज्ञानाभिमान को चूर कर देतीं हैं।

कुमार रजनीकान्त रंजन

२७/४/२०२०